

The Foundation of Education: A Reconsideration

शिक्षा की नींव : एक पुनर्विचार

तेत्सुको कुरोयानागी द्वारा लिखित और पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा द्वारा हिन्दी में अनुवादित पुस्तक

‘‘*तोत्तो-चान: द लिटिल गर्ल एट द विंडो’ की समीक्षा

*Danish Ahmad ✉ 

* Department of Education, University of Allahabad, Uttar Pradesh, India

Abstract

Totto-chan's personal journey stands as a testament to the transformative power of an education that respects and nurtures individuality. Once branded as a disruptive influence at her previous school, she blossoms within the supportive and stimulating environment of Tomoe Gakuen. Her evolution—from a curious, misunderstood child into a self-confident, creative, and empathetic individual—illustrates the profound impact that a tailored educational experience can have. Through her eyes, readers are invited to witness the beauty of unbridled curiosity and the joy of learning unencumbered by the constraints of traditional schooling. Sosaku Kobayashi, the headmaster of Tomoe Gakuen, emerges as a pivotal figure whose innovative methods and empathetic leadership redefine the role of a teacher.

Keywords: Innovative, Education, learning, environment, creative.

सारांश

तोत्तो-चान की व्यक्तिगत यात्रा एक ऐसी शिक्षा की परिवर्तनकारी शक्ति का प्रमाण है जो व्यक्तित्व का सम्मान करती है और उसका पोषण करती है। एक बार अपने पूर्व स्कूल में एक विघटनकारी प्रभाव के रूप में ब्रांडेड होने के बाद, वह तोमोए गाकुएन के सहायक और उत्तेजक वातावरण में खिलती है। एक जिज्ञासु, गलत समझे जाने वाले बच्चे से एक आत्मविश्वासी, रचनात्मक और सहानुभूतिपूर्ण व्यक्ति के रूप में उसका विकास एक गहन प्रभाव को दर्शाता है जो एक अनुकूलित शैक्षिक अनुभव हो सकता है। उसकी आँखों के माध्यम से, पाठकों को बेलगाम जिज्ञासा की सुंदरता और पारंपरिक स्कूली शिक्षा की बाधाओं से मुक्त सीखने की खुशी को देखने के लिए आमंत्रित किया जाता है। तोमोए गाकुएन के प्रधानाध्यापक सोसाकु कोबायाशी एक महत्वपूर्ण व्यक्ति के रूप में उभरे हैं, जिनके अभिनव तरीके और सहानुभूतिपूर्ण नेतृत्व एक शिक्षक की भूमिका को फिर से परिभाषित करते हैं।

कूटशब्द : नवोन्मेषी, शिक्षा, सीखना, वातावरण, रचनात्मकता

तोत्तो-चान : द लिटिल गर्ल एट द विंडो, तेत्सुको कुरोयानागी द्वारा लिखित और पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा द्वारा हिन्दी में अनुवादित, एक साधारण बचपन के संस्मरण तक ही सीमित नहीं है अपितु उससे कहीं अधिक यह किताब शिक्षा, व्यक्तित्व विकास और बाल मन के लिए अनुकूल वातावरण की परिवर्तनकारी भूमिका का एक गहन विश्लेषण पाठकों के समक्ष एक बड़े ही खूबसूरत ढंग से प्रस्तुत करती है। तोत्तो-चान की कहानी यह बताती है कि कैसे एक जिज्ञासु एवं उत्साही प्रवृत्ति की बच्ची को उसके अपरम्परागत स्वभाव के कारण एक पारंपरिक स्कूल (जोकि जिज्ञासा व रचनात्मकता से अधिक कठोर अनुशासन एवं सामाजिक मान्यताओं व परम्पराओं को अधिक महत्व देता है) से निष्कासन झेलना पड़ता है। जिसके बाद वह एक नए स्कूल तोमोए गाकुएन में दाखिला लेती है जहाँ से उसका शैक्षिक जीवन एक नये व महत्वपूर्ण दिशा की ओर मुड़ जाता है। तोमोए गाकुएन एक ऐसा संस्थान है जो प्रत्येक बच्चे के अद्वितीय गुणों को अपनाने के साथ ही साथ उनके समग्र विकास को भी बढ़ावा देता है।

तोत्तो-चान की स्वाभाविक जिज्ञासा (उदाहरणस्वरूप, उसका अपनी डेस्क को बार-बार खोलने और बंद करना) को उसके पिछले स्कूल में उसकी असीम जिज्ञासा की अभिव्यक्ति के बजाय व्यवधान के रूप में देखा गया। यह गलतफहमी एक ऐसी शैक्षिक प्रणाली का प्रतीक है जो आत्म-अभिव्यक्ति पर अनुरूपता को महत्व देती है और अपने छात्रों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं को समायोजित नहीं करती है। उस वातावरण का सख्त और नियम-बद्ध माहौल उस व्यवहार में संभावना को देखने में विफल रहा जिसे उसने "परेशान करने वाला" व्यवहार करार दिया था। सीखने और तलाशने की उसकी अंतर्निहित इच्छा को पोषित करने के बजाय, स्कूल ने उसके प्राकृतिक आवेगों को दबा दिया, अंततः उसे स्कूल से निष्कासित करके उसके भविष्य को अनिश्चितता के गर्त में जाने पर मजबूर कर दिया।

सब कुछ तब बदल जाता है जब तोत्तो-चान खुद को दूरदर्शी प्रधानाध्यापक सोसाकु कोबायाशी के मार्गदर्शन में तोमोए गाकुएन में पाती है। स्कूल की परिवेश उसके दर्शन की तरह ही अपरंपरागत है; कक्षाएँ पुनः उपयोग की गई रेल गाड़ियों में बनायी गई हैं, जो इस विचार का भौतिक प्रतिनिधित्व करती हैं कि शिक्षा चार दीवारों तक सीमित नहीं है बल्कि अन्वेषण और खोज से भरी एक यात्रा है। तोमोए गाकुएन में, बच्चों को अध्ययन के अपने रास्ते चुनने की स्वायत्तता दी जाती है, जिससे उन्हें निर्धारित पाठ्यक्रम का पालन करने के बजाय अपनी रुचि के अनुसार विषयों का अध्ययन करने की अनुमति मिलती है। यह स्वतंत्रता केवल शिक्षण का एक तरीका नहीं है - यह सीखने के प्रति प्रेम पैदा करने, आत्म-अनुशासन को प्रोत्साहित करने और छात्रों को अपनी शिक्षा की जिम्मेदारी लेने के लिए सशक्त बनाने का एक जानबूझकर किया गया प्रयास है।

तोमोए गाकुएन में पढ़ाई पाठ्यपुस्तकों और पारंपरिक कक्षा परिवेश से कहीं आगे तक फैली हुई है। रोजाना प्रकृति की सैर छात्रों को अपने आस-पास की दुनिया का प्रत्यक्ष अनुभव करने का मौका

देती है; वे वनस्पतियों और जीवों के जटिल विवरणों का अवलोकन करते हैं, बदलते मौसमों के बारे में सीखते हैं और प्रकृति के साथ गहरे संबंध की समझ विकसित करते हैं। यह बाहरी भ्रमण अनौपचारिक विज्ञान पाठ और शांत चिंतन के क्षणों के रूप में काम करते हैं, जो बाल शिक्षार्थियों में मन की शांति को पोषित करते हैं। इसी तरह, शारीरिक शिक्षा को रचनात्मकता और खुलेपन के साथ अपनाया जाता है जो शरीर और आत्म-छवि के बारे में पारंपरिक विचारों को चुनौती देता है। कहानी में एक यादगार प्रकरण आता है कि कैसे बच्चों को स्विससूट के बिना तैरने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है - एक अभ्यास जो शारीरिक उपस्थिति से जुड़ी असुरक्षाओं को दूर करने और खुद को ईमानदारी से, बिना किसी फ़िल्टर के स्वीकार करने को बढ़ावा देने के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह अभिनव दृष्टिकोण श्री कोबायाशी के इस विश्वास को दर्शाता है कि शिक्षा को हर छात्र की भावनात्मक और सामाजिक भलाई को संबोधित करना चाहिए, न कि केवल उनकी शैक्षणिक उपलब्धि को।

तोमोए गाकुएन में रचनात्मकता पर जोर इसके शैक्षिक मॉडल का केंद्र है। संगीत, पेंटिंग और कहानी सुनाने जैसी कलात्मक गतिविधियों को अकादमिक विषयों के लिए गौण नहीं माना जाता है; इसके बजाय, उन्हें एक अच्छी शिक्षा के आवश्यक घटकों के रूप में दैनिक जीवन में एकीकृत किया जाता है। तोत्तो-चान का संगीत के प्रति अपना प्यार इस माहौल में पोषित होता है, जो इस विचार को रेखांकित करता है कि कलात्मक अभिव्यक्ति बच्चे की कल्पना, लचीलापन और सहानुभूति विकसित करने के लिए महत्वपूर्ण है। स्कूल का दृष्टिकोण बताता है कि सच्ची शिक्षा हृदय और आत्मा को विकसित करने के बारे में उतनी ही होनी चाहिए जितनी कि किताबों से ज्ञान प्रदान करने के बारे में। समावेशिता तोमोए गाकुएन दर्शन का एक और आधार है। उस समय के कई अन्य शैक्षणिक संस्थानों के विपरीत, स्कूल विविध पृष्ठभूमि और विभिन्न क्षमताओं वाले बच्चों का स्वागत करता है। विकलांग छात्रों, जैसे कि यासुकी यामामोतो (पोलियो से पीड़ित एक लड़का) को अलग या कलंकित नहीं किया जाता है; इसके बजाय, उन्हें अपने साथियों की तरह सीखने, खेलने और बढ़ने के समान अवसर दिए जाते हैं। यह समावेशी माहौल क्रांतिकारी है, खासकर उस युग को देखते हुए जिसमें इस कहानी पृष्ठभूमि गढ़ी गई है। हर छात्र के साथ समान सम्मान और विचार के साथ व्यवहार करके, श्री कोबायाशी यह दर्शाते हैं कि शिक्षा सभी के लिए सुलभ और लाभकारी होनी चाहिए, चाहे शारीरिक या सामाजिक अंतर कुछ भी हों।

इसके अलावा, अनुशासन के प्रति स्कूल का दृष्टिकोण इसे पारंपरिक मॉडलों से अलग करता है। तोमोए गाकुएन में दंडात्मक उपायों की जगह मार्गदर्शन और समझ की प्रणाली ने ले ली है। जब तोत्तो-चान को कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है (जैसे कि वह समय जब उसने अपना पर्स शौचालय में गिरा दिया था और उसे निकालने में बहुत समय लगा दिया था) श्री कोबायाशी कठोर



फटकार का सहारा नहीं लेते। इसके बजाय, वे इन क्षणों का उपयोग जवाबदेही और दृढ़ता सिखाने के अवसर के रूप में करते हैं, उसे बिना किसी डर या शर्म के जो उसने शुरू कि या था उसे पूरा करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। गलतियों को संबोधित करने का यह दयालु तरीका बच्चों में जिम्मेदारी और आत्म-सम्मान की भावना को बढ़ावा देता है, ऐसा माहौल बनाता है जहाँ वे प्रयोग करने, गलतियाँ करने और अंततः उनसे सीखने में सुरक्षित महसूस करते हैं।

स्कूल में पारंपरिक पाठ्यक्रम से परे पाठ भी शामिल किए गए हैं। उदाहरण के लिए, दोपहर के भोजन की एक अनूठी परंपरा के तहत छात्रों को साझा करने के लिए “समुद्र से कुछ और पहाड़ से कुछ” लाने की आवश्यकता होती है, यह जीवन के हर पहलू में व्याप्त है जोकि बच्चों को अपने आसपास की दुनिया की सराहना करने और उससे सीखने के लिए प्रोत्साहित करता है। इस तरह के अभ्यास उन अच्छे व्यक्तियों के विकास में योगदान करते हैं जो न केवल ज्ञानवान होते हैं बल्कि भावनात्मक और सामाजिक रूप से भी जागरूक होते हैं। युद्धकालीन जापान की पृष्ठभूमि में स्थापित, इस कहानी का महत्व उच्च स्तर पर पहुंच जाता है। ऐसे दौर में जब राष्ट्र पर सैन्यवादी मूल्यों और कठोर सामाजिक संरचनाओं का बोलबाला था, तोमोए गाकुएन रचनात्मकता और करुणा के आश्रय के रूप में उभरा। स्कूल का अस्तित्व ही उस समय के प्रचलित मानदंडों के खिलाफ अवज्ञा का कार्य था। इसने शिक्षा का एक वैकल्पिक दृष्टिकोण पेश किया- एक ऐसा दृष्टिकोण जिसमें व्यक्तिगत क्षमता का विकास सर्वोपरि था, और जहां बच्चों को भावनात्मक, सामाजिक और बौद्धिक जरूरतों वाले संपूर्ण प्राणी के रूप में देखा जाता था। हवाई हमले में तोमोए गाकुएन का दुखद विनाश संघर्ष के समय में प्रगतिशील विचारों की भेद्यता की मार्मिक याद दिलाता है। तोत्तो-चान की व्यक्तिगत यात्रा एक ऐसी शिक्षा की परिवर्तनकारी शक्ति का प्रमाण है जो व्यक्तित्व का सम्मान करती है और उसका पोषण करती है। एक बार अपने पूर्व स्कूल में एक विघटनकारी प्रभाव के रूप में ब्रांडेड होने के बाद, वह तोमोए गाकुएन के सहायक और उत्तेजक वातावरण में खिलती है। एक जिज्ञासु, गलत समझे जाने वाले बच्चे से एक आत्मविश्वासी, रचनात्मक और सहानुभूतिपूर्ण व्यक्ति के रूप में उसका विकास एक गहन प्रभाव को दर्शाता है जो एक अनुकूलित शैक्षिक अनुभव हो सकता है। उसकी आँखों के माध्यम से, पाठकों को बेलगाम जिज्ञासा की सुंदरता और पारंपरिक स्कूली शिक्षा की बाधाओं से मुक्त सीखने की खुशी को देखने के लिए आमंत्रित किया जाता है। तोमोए गाकुएन के प्रधानाध्यापक सोसाकु कोबायाशी एक महत्वपूर्ण व्यक्ति के रूप में उभरे हैं, जिनके अभिनव तरीके और सहानुभूतिपूर्ण नेतृत्व एक शिक्षक की भूमिका को फिर से परिभाषित करते हैं। उनके दृष्टिकोण की विशेषता हर बच्चे की क्षमता में गहरी आस्था और न केवल उनकी बुद्धि बल्कि उनके चरित्र को पोषित करने की प्रतिबद्धता है। मार्गदर्शन के अधिक दयालु और समझदार तरीके के पक्ष में पारंपरिक अनुशासनात्मक प्रथाओं को अस्वीकार करके, वह एक ऐसा वातावरण बनाता है जिसमें विश्वास और आपसी सम्मान पनपता है। बच्चों को अपनी स्वयं की सीखने की यात्रा का नेतृत्व करने की अनुमति देने पर उनका जोर आदर्श से एक क्रांतिकारी प्रस्थान है और उन शिक्षकों के लिए एक स्थायी प्रेरणा के रूप में कार्य करता है जो अधिक मानवीय

और प्रभावी सीखने के वातावरण का निर्माण करना चाहते हैं। कुरोयानागी की कथा शैली सरल और विचारोत्तेजक दोनों है। उनका गद्य, सुलभ और अलंकृत, शिक्षा, सामाजिक न्याय और व्यक्तिगत विकास के जटिल विषयों को संबोधित करते हुए बचपन के आश्चर्य और मासूमियत को पकड़ने में कामयाब होता है। पाठ का संवादात्मक लहजा सभी उम्र के पाठकों को कहानी के साथ भावनात्मक स्तर पर जुड़ने के लिए आमंत्रित करता है, जिससे तोमोए गाकुएन के सबक अंतिम पृष्ठ को पलटने के लंबे समय बाद तक गूँजते रहते हैं। विशद वर्णन और हार्दिक टिप्पणियों के माध्यम से, लेखक एक ऐसी दुनिया को जीवंत करता है जहाँ सीखना एक बोझिल दायित्व के बजाय एक आनंदमय और मुक्तिदायक प्रक्रिया है।

अपनी तात्कालिक कथा से परे, तोत्तो-चान : द लिटिल गर्ल एट द विंडो ने शैक्षिक विमर्श पर एक स्थायी प्रभाव डाला है। यह अधिक लचीले, समावेशी और बाल-केंद्रित दृष्टिकोण की वकालत करके पारंपरिक स्कूली शिक्षा के प्रमुख प्रतिमानों को चुनौती देता है। मानकीकृत शिक्षा की पुस्तक की आलोचना और व्यक्तित्व के उत्सव ने शिक्षाविदों, नीति निर्माताओं और अभिभावकों के बीच स्कूली शिक्षा के वास्तविक उद्देश्य के बारे में बातचीत को बढ़ावा दिया है। ऐसे युग में जहाँ कई शैक्षिक प्रणालियाँ एक समान पाठ्यक्रम और कठोर अनुशासनात्मक उपायों पर निर्भर रहती हैं, तोमोए गाकुएन की विरासत एक आकर्षक विकल्प प्रदान करती है - एक ऐसा मॉडल जहाँ रचनात्मकता, सहानुभूति और आत्मनिर्णय को अकादमिक उपलब्धि जितना ही महत्व दिया जाता है। पुस्तक के सबसे उल्लेखनीय पहलुओं में से एक शिक्षा की आदर्शवादी दृष्टि को उसकी चुनौतियों के यथार्थवादी चित्रण के साथ संतुलित करने की इसकी क्षमता है। जबकि तोमोए गाकुएन को एक लगभग काल्पनिक संस्थान के रूप में दर्शाया गया है जहाँ हर बच्चा अपनी गति से खोज करने और बढ़ने के लिए स्वतंत्र है, कथा इस तरह के मॉडल को बड़े पैमाने पर लागू करने में निहित कठिनाइयों को स्वीकार करने से नहीं कतराती है। संरचना की कमी और व्यक्तिगत पहल पर निर्भरता, हालांकि इस अनूठी परिवेश में फायदेमंद है, लेकिन अधिक पारंपरिक शैक्षिक प्रणालियों में इस दृष्टिकोण को दोहराने की व्यवहार्यता के बारे में सवाल उठाती है। इन चुनौतियों के बावजूद, स्कूल के दर्शन की स्थायी अपील इस विश्वास के प्रति अपनी अटूट प्रतिबद्धता में निहित है कि हर बच्चे को ऐसी शिक्षा मिलनी चाहिए जो उनकी पूरी क्षमता का पोषण करे। जैसे-जैसे पाठक तोत्तो-चान के जीवन के पन्नों से गुजरते हैं, उन्हें उस परिवर्तनकारी प्रभाव की याद आती है जो करुणामय, अभिनव शिक्षण बच्चे के भविष्य पर डाल सकता है। कहानी शिक्षकों और अभिभावकों दोनों के लिए कार्रवाई का एक शक्तिशाली आह्वान है: यह हमें शिक्षा के बारे में अपनी धारणाओं की फिर से जांच करने और एक ऐसे दृष्टिकोण के लाभों पर विचार करने के लिए प्रोत्साहित करती है जो व्यक्तित्व, रचनात्मकता और भावनात्मक कल्याण को प्राथमिकता देता है। एक ऐसी दुनिया में जहाँ अनुरूपता और मानकीकरण के दबाव अक्सर प्रत्येक छात्र की अनूठी ज़रूरतों को दबा देते हैं, तोमोए गाकुएन की विरासत एक प्रेरक अनुस्मारक के रूप में कार्य करती है कि सच्ची शिक्षा



तब होती है जब बच्चों को खुद होने की अनुमति दी जाती है - जब उन्हें सपने देखने, सवाल करने और अपनी शर्तों पर दुनिया की खोज करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। आखिरकार यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि तोत्तो-चान : द लिटिल गर्ल एट द विंडो बचपन के रोमांचों के संस्मरण से कहीं अधिक है; यह शिक्षा की नींव पर पुनर्विचार करने का एक घोषणापत्र है। यह हमें स्कूलों को एकरूपता पैदा करने वाली फैक्ट्रियों के रूप में नहीं बल्कि जीवंत समुदायों के रूप में देखने की चुनौती देता है जहाँ हर बच्चे को उसकी व्यक्तिगतता के लिए मनाया जाता है। एक बार गलत समझी गई लड़की की नज़र से, हम यह समझते हैं कि शिक्षा नियमों और विनियमों के सख्त नियम-कायदों के बजाय जीवन की अंतहीन संभावनाओं को तलाशने का निमंत्रण होनी चाहिए। तोमोए गाकुएन द्वारा दिए गए सबक गूँजते रहते हैं क्योंकि वे एक सार्वभौमिक सत्य को बयां करते हैं: कि सबसे अच्छी शिक्षा वह है जो मन, हृदय और आत्मा का पोषण करती है। तोत्तो-चान की यात्रा की विरासत को प्रतिबिंबित करते हुए, कोई भी प्रगतिशील शिक्षा की परिवर्तनकारी शक्ति से प्रेरित हुए बिना नहीं रह सकता है। यह पुस्तक न केवल पुरानी शैक्षिक प्रथाओं की आलोचना प्रस्तुत करती है, बल्कि भविष्य के लिए एक आशावादी दृष्टि भी प्रस्तुत करती है - जिसमें बच्चों को अच्छी तरह से विकसित, सहानुभूतिपूर्ण और अभिनव व्यक्तियों के रूप में विकसित होने की स्वतंत्रता और समर्थन दिया जाता है। इस दृष्टि का प्रभाव कक्षा से परे तक फैला हुआ है; यह पूरे समाज के लिए कठोर अनुरूपता पर रचनात्मकता, समावेशिता और करुणा को महत्व देने का आह्वान है। जैसे-जैसे तोत्तो-चान की कहानी आगे बढ़ती है, यह स्पष्ट हो जाता है कि शिक्षा का सही मापदंड मानकीकृत परीक्षा स्कोर या नियमित शोड्यूल में नहीं पाया जाता है, बल्कि एक बच्चे की स्वाभाविक जिज्ञासा को पोषित करने और उसे खुले दिल और जिज्ञासु दिमाग से दुनिया का पता लगाने के लिए सशक्त बनाने की क्षमता में पाया जाता है। खोज की खुशियों और आत्म-अभिव्यक्ति के महत्व का जश्र मनाते हुए, तोत्तो-चान: द लिटिल गर्ल एट द विंडो हमें याद दिलाती है कि जीवन में सबसे स्थायी सबक वे हैं जो अनुभव, सहानुभूति और खुद होने की स्वतंत्रता के माध्यम से सीखे जाते हैं। इस कहानी की स्थायी अपील इसके कालातीत संदेश में निहित है - एक ऐसा संदेश जो पीढ़ियों से शिक्षकों, माता-पिता और पाठकों को चुनौती देता और प्रेरित करता रहता है। एक देखभाल और अभिनव शैक्षिक वातावरण के गहन प्रभाव को दर्शाते हुए, पुस्तक हम सभी से आग्रह करती है कि हम सीखने के तरीके को फिर से सोचें और हर बच्चे के भीतर निहित क्षमता को अपनाएं। ऐसा करने से, यह न केवल शिक्षा के बारे में हमारे सोचने के तरीके को बदलता है बल्कि एक अधिक दयालु और रचनात्मक समाज के निर्माण के लिए एक उम्मीद भरा खाका भी पेश करता है। अंत में, तोत्तो-चान : द लिटिल गर्ल एट द विंडो मानवीय भावना की लचीलापन और इस विश्वास के लिए एक शक्तिशाली श्रद्धांजलि के रूप में खड़ा है कि सही मार्गदर्शन और एक सहायक वातावरण के साथ, हर बच्चा फल-फूल सकता है। यह इस विचार का प्रमाण है कि शिक्षा आत्म-खोज, रचनात्मकता और आजीवन सीखने की यात्रा होनी चाहिए - एक ऐसी यात्रा जो एक बच्चे को वह बनने देने के सरल कार्य से शुरू होती है जो वह है।

**पुस्तक एनबीटी, दिल्ली से प्रकाशित है।